International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 13-04-2019; Accepted: 16-05-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 4; July 2019; Page No. 73-74

हिंदी सहित्य के विकास की परम्परा में प्रवासी साहित्य का योगदान

संजय कुमार

पीएच.डी, हिंदी, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्रस्तावना

प्रवासी साहित्य हिंदी जगत में एक नया वाक्यांश है जो दिनोंदिन अपने रचनात्मक रूप से हिंदी के साहित्य को सघन बनाने का काम कर रहा है और पाठक वर्ग को प्रवास की संस्कृति, संस्कार एवं उस भू-भाग से जुड़े लोगों की स्थिति से रूबरू कराने का प्रयास भी कर रहा है। 'प्रवासी हिंदी साहित्य' हिंदी साहित्य में जुड़ती एक नई कड़ी है जो प्रवासियों के मनोविज्ञान से जुड़ी है, जो न केवल एक नई विचारधारा है बल्कि एक नई अंतर्दृष्टि भी है।

प्रवासी साहित्य की परम्परा बहुत पुरानी नहीं है, किंतु फिर भी प्रवासी साहित्य अपनी संवेदनात्मक रचनाशीलता से साहित्य के क्षेत्र में गहरी जड़े जमा चुका है। भारत से दूर अन्य देशों में बसे भारतीयों के अथक प्रयासों से ही आज प्रवासी साहित्य समृद्ध और सशक्त बन पाया है। वर्तमान समय में भूमंडलीकरण से प्रवास की प्रक्रिया एवं प्रवासी हिंदी साहित्य में भी विस्तार हुआ । "हिंदी साहित्य में जिस प्रभावशाली ढंग से विदेशों में लिखे जाने वाले हिंदी साहित्य को पिछले दो- तीन दशकों में पहचान मिली हैं इसका कारण प्रवास की प्रकिया में आई निरंतरता,भूमंडलीकरण,विश्व बाजार, दूर संचार आदि के साथ-साथ विश्व भर में फैले हिंदी के रचनाकारों का विभिन्न माध्यमों से साहित्यिक जुडाव है"[1]

संपूर्ण विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ से लोग भारी संख्या में दूसरे देशों के लिए पलायन करते है। यह प्रक्रिया लगभग चार सौ वर्ष पुरानी है । आज भूमंडलीकरण के कारण के विभिन्न देशों में भारतवासी बसे हैं। विदेश जाना और वहाँ बसना अब कोई जटिल समस्या नहीं है, लेकिन वहाँ रहकर लेखन कार्य करना प्रवासियों को अलग ही विशिष्टता प्रदान करता है। डॉ. रामदरश मिश्र के अनुसार "प्रवासी साहित्य ने हिंदी को नई जमीन दी है और हमारे साहित्य का दायरा दलित विमर्श और स्त्री विमर्श की तरह विस्तृत किया है।"[2]

साहित्य उसी भाषा लिखा जाता है जिस भाषा के संस्कार व्यक्ति को बचपन से मिलते है। साहित्य की अभिव्यक्ति यदि विदेशी भाषा में की जाए तो ऐसा साहित्य संवेदनशील नहीं होगा। इसलिए विदेशों में बैठे हिंदी साहित्यकारों ने अपने लेखन का माध्यम हिंदी चुना, क्योंकि इसके माध्यम से वह अपने पीछे छूट चुके देश के आंतरिक संबंध को बनाए रखना चाहते है। प्रवासी लेखक प्रवास के दुख-दर्द की संवेदनाओं के साथ अपने देश के संस्कारों को जोड़कर उनमें व्याप्त विषमताओं को कागज पर उतार देता है और यही संवेदनाएँ सहज ही सबसे जुड़कर सब की संवेदनाएँ बन जाती है।

अपनी इन्हीं संवेदनाओं को सहेज ने के प्रयास को प्रवासी साहित्यकारों ने जारी रखा और साहित्य की इस परम्परा को आगे बढ़ाने में अपना सहयोग दिया। उसी का परिणाम आज हमारे सामने हैं कि हम प्रवासियों की जिंदगी से सहज ही जुड़ कर उनके प्रवास के अनुभवों को साझा कर रहे हैं। प्रवासी साहित्यकार अपने लेखन के माध्यम से जो अनुभव और भावनाएँ अपने घर, अपने देश तक पहुँचाते हैं, वह अपने लोगों के लिए खुली खिड़की का कार्य करती है, जहाँ से वे दूसरे देश को सामाजिक, भौतिक और यथार्थ की संस्कृति को एक साथ बखूबी देख सकते हैं। प्रवासी लेखक अपने लेखन के माध्यम से देश और विदेश की संस्कृति में समन्वय का जो कार्य कर रहे हैं वह सराहनीय है। वे सभी लेखक अपने पाठक वर्ग को नवीन संस्कृति और साहित्य की उपयोगिता से अवगत कराने का कार्य कर रहे हैं। वर्तमान के प्रवासी लेखकों से ये अपेक्षाएँ की जा रही है कि वह समन्वय की रीति से कार्य करें और देश दुनिया के समस्त संकटों से उभर कर साहित्य में समन्वयात्मक दृष्टिकोण स्थापित करें।

वर्तमान में रचे जा रहे साहित्य में प्रवासी लेखक अपने देश के साथ-साथ संपूर्ण विश्व से अपने जुड़ाव को अभिव्यक्त कर रहे हैं। भारतीय प्रवासी लेखक भावनात्मक रूप से भारत से जुड़े हुए हैं, यही कारण है कि उनके साहित्य में प्रवासी भूमि के साथ-ही अपने देश के प्रति प्रेम की भावना भी देखने को मिलती है। वस्तुतः देखा जाए तो आज के प्रवासी साहित्य की संपूर्ण दृष्टि भारत के रंग में रंगी हुई है। साथ ही इनके साहित्य में आधुनिक दौड़ और मानसिक द्वंद्व का यथार्थ रूप देखने को मिलता है। यही विभेदक दृष्टिकोण प्रवासियों के साहित्य को नवीनता प्रदान करता है।

प्रवासी साहित्यकार चाहे विदेश में बसे हो किंतु उनका मन, आत्मा देश की मिट्टी में निवास करती है। भारतीय प्रवासी आत्मा के स्तर पर स्वयं को अपने देश से अलग नहीं कर पाया, यही कारण है कि इन साहित्यकारों की रचनाओं में परदेस जाने से पहले की स्थिति और परदेस आने के बाद विदेश की स्मृति को अपनी रचनाओं में चित्रित किया है। इस प्रकार का साहित्य, साहित्य के मानदण्डों के अनुरूप नहीं होता । इसमें केवल भावनाओं और वर्षो पूर्व की स्थिति को वर्तमान में अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया जाता है। इनके साथ हमेशा जन्मभूमि और कर्मभूमि के बीच होने का द्वंद्व चलता रहता है। प्रवासियों द्वारा लिखित सृजनात्मक साहित्य ने हिंदी की एक छोटी सी दुनिया बनाई है, जिसकी आत्मा हिंदी की और प्राण भारतीयता है। डॉ.कमल किशोर गोयनका कहते है- " कि प्रवासी साहित्य की गति और विकास को अब कोई भी विरोधी शक्ति नहीं रोक सकती।

वह हिंदी साहित्य की एक सशक्त धारा बन चुकी है और उसे हमें हिंदी साहित्य की प्रमुख धारा में सम्मानपूर्ण स्थान देना होगा ।"[3]

प्रवासी साहित्य की रचना के कारण चाहे जो भी रहे हो, उनमें चित्रित परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी रही हो, किंतु आज का सत्य यह है कि प्रवासी साहित्य, भारतीय हिंदी साहित्य का अभिन्न अंग बन गया है । प्रवास की समस्याओं और संघर्षो की गाथाओं से भरा यह साहित्य हमें मनुष्य के जुझारूपन और साथ ही सदैव प्रयत्नशील बने रहने की सीख देता है ।

प्रवासी साहित्य लेखन की यह परम्परा लंबे समय तक यथावत बनी रहें । जिससे आने वाले समय की नई पीढ़ी को प्रवास से संदर्भित सारी जानकारी आसानी से मिलती रहें । प्रवासी साहित्यकार अपने लेखन की परम्परा को इसी प्रकार निभाते रहे, और भारतवंशी होने के गर्व को सदा अपनी लेखनी से उद्भासित करते रहे, तभी अपने प्रवासी साहित्यकार के रूप को सहज परिभाषित कर सकेंगे।

संदर्भ सूची

1. सुधीश पचौरी,भूमंडलीकरण और उत्तर सांस्कृतिक विमर्श, आनंद प्रकाशन,नई दिल्ली, 2006
2. अक्षरम संगोष्ठी, अप्रैल-जून 2006,पृष्ठ संख्या 6
3. डॉ.कमल किशोर गोयनका, 'भूमिका शब्दयोग', अप्रैल 2008, पृष्ठ संख्या 8
4. डॉ. कमल किशोर गोयनका, हिंदी का प्रवासी साहित्य, प्रथम संस्करण 2011, अमित प्रकाशन,
5. उषा राजे सक्सेना, विदेशों में हिंदी साहित्य, नया ज्ञानोदय, दिसम्बर 2008
6. तेजेंद्र शर्मा, प्रवासी भारतियों की वर्तमान पीढ़ी,प्रवासी संसार, जनवरी 2005
7. विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ